रामकली महला १ सिध गोसटि ੴ सतिगुर प्रसादि ॥

एक समैं माझे में वटाले शहर पास अचल नाम सथान है, जहां सिवरात फागुन वदी चौदस का मेला होता है। तहां सिध सभी आए थे॥ स्री गुरू नानक देव जी भी गए। तहां सिधों से चरचा हुई, सो चरचा इस बानी में लिखी है। इस कर के इस बाणी का नाम सिध गोसटी है। सो उस सिध गिसट को सिखों प्रती और असथान और काल में फिर गुरू जी सुनाउते भए हैं:

सिध सभा करि आसणि बैठे संत सभा जैकारो ॥

गुरू जी कहिते हैं: हे भाई! सिघ सभा लगाइ कर आसणों पर बैठे हूए थे। तब मैने कहा: हे संत सभा! तुम को जैकारो कहीए निमसकार है। तब सिधों ने कहिआ: तुमने भिंन भिंन नमसकार किउं नहीं करी है। तब गुरू जी कहते भए: प्रिथम तो प्राणों का भरोसा कुच नहीं है, दूसरे भिंन भिंन करने से देरी लागती थी॥

तिसु आगै रहरासि हमारी साचा अपर अपारो ॥

हे सिधो! हमारी तिसु आगे रहरासि कहीए नमसकार है, जो साचा अपर अपारु है, मैने दोहां को नमसकार नहीं करी है॥

मसतकु काटि धरी तिसु आगै तनु मनु आगै देउ ॥

मसतकु काट के तन मन सभ आगे धर देउ॥ जे कहे जो परमेसर को तन मन देते हो तउ सिधो को निमसकार किउं करी? तिस पर कहते हैं:

नानक संतु मिलै सचु पाईऐ सहज भाइ जसु लेउ ॥१॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: संत के मिलणे ते सच रूप प्रमेसर दी प्रापती होती है अरु सहज भाइ कहीए निरजतन ही जस को लईदा है॥1॥

तब सिधों ने कहिआ: हे बाले! चलु तुम को तीरथ जात्रा करवाईए। तिस पर कहते भए:

किआ भवीऐ सचि सूचा होइ ॥

हे सिधो! भवणे कर के किआ होता है? सच नाम जप कर के जीउ सूचा होता है॥

साच सबद बिनु मुकति न कोइ ॥१॥ रहाउ ॥

तां ते साचे गुरां दे सबद ते बिना मुकति कोई नहीं होता है॥1॥रहाउ॥ प्रशन:

कवन तुमे किआ नाउ तुमारा कउनु मारगु कउनु सुआओ ॥

आप कवन सरूप हो 1, अरु तुमारा नाम किआ है 2, अरु तेरा रसता कवन है 3, अर तेरा (सुआओ) परोजन कवन है? 4॥ उतर:

साचु कहउ अरदासि हमारी हउ संत जना बलि जाओ ॥

हे सिधो! मैं सच कहता हां अर संतों के आगे हमारी अरदासि है अर हउ संत जना के बलिहार हाता* हूं, भाव अरथ एह है – जो संतों दा सरूप सोई मेरा सरूप है, 1 जो संतों दा नाउं सोई हमारा नाउं है, 2 जो संतों दा मारग सोई हमारा मारग है, 3 जो संतों का प्रोजनु है, सोई हमारा प्रोजन है॥ प्रसनु:

* वा – सच सरूप का वा साच कहिने वाला हूं 1, अर मेरा नाम अरदासीआ है 2, अर संतां का जो मारग है, सोई हमारा मारग है 3, अर संतां के बलिहारे जाना एही परोजन है 4 ॥

कह बैसहु कह रहीऐ बाले कह आवहु कह जाहो ॥

हे बाले! कहां बैठते हो 1, अर कहां रहिते हो 2, औ कहां ते आए हो 3, औ कहां जाहुगे 4?

नानकु बोलै सुणि बैरागी किआ तुमारा राहो ॥२॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: हम को सिद्ध बोले सुण हे बैरागवान! तुमारा राहु किआ है? ॥2॥ उत्र:

घटि घटि बैसि निरंतरि रहीऐ चालहि सतिगुर भाए ॥

घटां घटां में जो (निरंतरि) एक रस (बैसि) इसथित है तिस में हम रहिते हैं 1, अर सतिगुरों की आग्या अनुसार चलना एह हमारा राहु है 2॥

सहजे आए हुकमि सिधाए नानक सदा रजाए ॥

सहजे ही हुकम से आए हैं 3, औ हुकम में ही (सिधाए) जाहिगे 4। स्री गुरू जी कहिते हैं: सरब काल प्रमेस्वर की (रजाए) आग्या में चलते हैं॥

आसणि बैसणि थिरु नाराइणु ऐसी गुरमति पाए ॥

आसण कर के जो थिरु नाराइण में बैसणा करिआ है, सो ऐसी गुरमति है जिस कर के एह सरब साधन पाए हैं॥

गुरमुखि बूझै आपु पछाणै सचे सचि समाए ॥३॥

जो गुरों द्वारे समझ के अपने आप को पछाणे वहु सचे में निसचे कर के समाइ जाता है। भाव तुम भी गुरमति अंगीकार कर के अपने आप को पछानो ॥3॥ चरपट का प्रशन:

दुनीआ सागरु दुतरु कहीऐ किउ करि पाईऐ पारो ॥

एह जो दुनीआं दुस्तर समुंदर कहीता है इस के पार को कैसे पाईए?

चरपटु बोलै अउधू नानक देहु सचा बीचारो ॥

चरपट जी कहिते भए हैं: अवधूत नानक सचा उत्र बीचार कर देहु॥ चरपट को वडिआई सहित उत्र कहते हैं:

आपे आखै आपे समझै तिसु किआ उतरु दीजै ॥

जो आपे प्रसनु करे औ आपे ही समझता होवै तिस को उत्र किआ देना है अरथात आप सभ समझते हैं।

साचु कहहु तुम पारगरामी तुझु किआ बैसणु दीजै ॥४॥

हम सचु कहिते हैं तुम तो संसार ते पार हो तुमको (बैसणु) उत्र कया दीजीए ॥4॥
पुनः चरपट ने कहा कि मैं आप की रसनां दुआरा कुछ सुना चाहता हूं? तिसु पर कहिते हैं:

जैसे जल महि कमलु निरालमु मुरगाई नै साणे ॥

जैसे जल में कमल असंग रहिता हैं अरु जैसे सुरगाई की असंगता में (नैसाणे) नीसानी है, जो जल में रहि के पंख नहीं भीजता, ऐसे ही संसार में संतु असंग रहे॥

सुरति सबदि भव सागरु तरीऐ नानक नामु वखाणे ॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: पुनः प्रीती से गुरों के उपदेस से नाम को (वखाणे) जपे, इउं भवसागर को (तरीऐ) तरीता है॥ तरे होए पुरसों की उस्तती करते हैं:

रहहि इकांति एको मनि वसिआ आसा माहि निरासो ॥

वहु इकांत रहिते हैं पुना एक में ही उन का मनु वसिआ हैं, अरु आसा के बीच ही निरास हैं भाव सरब बिवहारों में असंग हैं॥

अगमु अगोचरु देखि दिखाए नानकु ता का दासो ॥५॥

(अगम अगोचरु) प्रमातमा को आप देखा है पुनः अवरों को दिखावते हैं। स्री गुरू जी कहिते हैं: हम तिन के दास हैं। भाव तुम भी दासा भाउ अंगीकार करो तो तुम को भी प्रापती हो जाइगी॥5॥ और सिध तीन प्रस्न करता भया तीन ही उत्र इस पौड़ी में दीए हैं:

सुणि सुआमी अरदासि हमारी पूछउ साचु बीचारो ॥

स्री गुरू जी से कहिते हैं: हे स्वामी! हमारी बेनती सुनो: हम साच पूछते हैं, वीचार कर उत्र दीजीए॥

रोसु न कीजै उतरु दीजै किउ पाईऐ गुर दुआरो ॥

आप क्रोध न करना हम को उत्र देना॥ प्रस्न: 1 प्रमेस्वर नूं किस प्रकार पाईए? उत्र 1 प्रमेसर को गुरां द्वारे पाईता है॥

इहु मनु चलतउ सच घरि बैसै नानक नामु अधारो ॥

प्रस्नः इह मनु जो (चलतउ) चंचल हूआ हूआ है, सो (सच घरि) परमेसर में कैसे इसथित होता है 2॥ उत्र स्री गुरू जी कहिते हैं: नाम के आसरे इसथित होता है 2॥

आपे मेलि मिलाए करता लागै साचि पिआरो ॥६॥

प्रस्नः अपने मेल में करता कैसे मिलावे? उत्रः झूठ तिआग के जो सच में पिआरु लागै तो करता मेल में मिलाई लेता हैं॥6॥ लोहारीपा सिधु सिधों का निज सिधांत कहता है:

हाटी बाटी रहहि निराले रूखि बिरखि उदिआने ॥

(हाटी) दुकान, भाव घर (बाटी) रसते इन ते सिधु निआरा रहि करि उद्यान के ब्रिछों में जाइ बैठे* ॥

* वा (रुख) 'निसफल ब्रिख फल वाल का उदिआन के ब्रिछों में रुख रखे। वा (कंद) वरतला कार (मूल) मूली की तरां जो लंबाई में होवै॥

कंद मूलु अहारो खाईऐ अउधू बोलै गिआने ॥

(कंद) फल और जो जमीन के बीच से निकसते हैं सो मूल तिन का आहारु करे अर मुख ते (अउधू) सुध ग्यान बोले॥

तीरथि नाईऐ सुखु फलु पाईऐ मैलु न लागै काई ॥

औ तीरथों का इसनान करीए तो सुख रूप फल को पाईता है, पुना किसी प्रकार की मैल नहीं लागती॥

गोरख पूतु लोहारीपा बोलै जोग जुगति बिधि साई ॥७॥

गोरख का (पूतु) बेटा, भाव चेला लोहरीपा बोलता भइआ: हे नानक! जोग में जुड़ने की बिधी वही है, जो मैंने पीछे कही है॥7॥ गुरू जी निज सिधांत कहिते हैं:

हाटी बाटी नीद न आवै पर घरि चितु न डोलाई ॥

(हाटी) घरों में रहै अर (बाटी) रसते में भी चले, परंतू अविद्या रूप निंदरा न आवै औ पर इसत्री में चित्त ना डुलावे॥

बिनु नावै मनु टेक न टिकई नानक भूख न जाई ॥

नाम ते बिनां मन को न टिकावै अरे नाम जपने की भूख न जावै अरथात चाह बनी रहे॥

हाटु पटणु घरु गुरू दिखाइआ सहजे सचु वापारो ॥

सरीर रूप सहिर में (हाटु) रिदा जो है तिस में (घरु) सरूप अपना गुरों ने दिखाइ दीआ है, अब सुते ही सच नाम का जपना रूप बिआपार करते हैं॥

खंडित निद्रा अलप अहारं नानक ततु बीचारो ॥८॥

निंद्रा खंडत करी है औ (अलप) थोड़ा अहार करते हैं, प्रतक्ख्य वा अविद्या निंद्रा औ प्रविरती रूप अगर थोड़ा कीआ है। स्री गुरू जी कहिते हैं: तत्त सिख्या का बीचार करते हैं॥8॥ निजमत में लिआवणे को सिधों का प्रशन:

दरसनु भेख करहु जोगिंद्रा मुंद्रा झोली खिंथा ॥

हे बाले! इह जो हमारा जोगी दरसन है तुम इस का भेख धारन करो? तुम को जोगीओं का गुरू बनावैंगे, तां ते मुंदरां पहिरो अर झोली पकड़ो, खिंथा गले में पावो॥

बारह अंतरि एकु सरेवहु खटु दरसन इक पंथा ॥

खट दरसनों में जो एक हमारा दरसन है इस में बारहि पंथ हैं। बारां में से एक आई पंत तुम सेवन करो॥

इन बिधि मनु समझाईऐ पुरखा बाहुड़ि चोट न खाईऐ ॥

(इन बिधि) इस रीती से, भाव हमारे पंथ में आइके भली प्रकार मन को समझाईए। हे पुरखा! (बाहुड़ि) फेर जम की चोट ना खाईए, भाव नहीं खाईती है॥

नानकु बोलै गुरमुखि बूझै जोग जुगति इव पाईऐ ॥९॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: वुह सिद्ध ऐसे बोले कि जब गुरों द्वारे समझे वा पूछे तब जोग की जुगती इस प्रकार पाईती है॥9॥

अंतरि सबदु निरंतरि मुद्रा हउमै ममता दूरि करी ॥

अपने ब्रहम को अंतर एक रस जाणिआ है एह दरसन का भेख धार कर जोगीओं के इंदर हूए हैं औ हंता को तिआग कै निम्रता धारी है। पुना ममता को तिआग कै समता जो धारी इह दो मुंद्रां पहिरीआं है॥

कामु क्रोधु अहंकारु निवारै गुर कै सबदि सु समझ परी ॥

काम, क्रोध औ हंकार जो गुरू सबद कर के निवारे हैं, सो मेरे मन में स्रेशट समझ परी है। इहु हमारा आई पंथ है॥

खिंथा झोली भरिपुरि रहिआ नानक तारै एकु हरी ॥

जो परमेसर को हसती चीटी में भरपूर हो रहिआ जाणिआ है एह हमारी खिंथा है। स्री गुरू जी कहिते हैं: एक हरी ही तारेगा एह जो निसचा कीआ है, इह झोली है॥

साचा साहिबु साची नाई परखै गुर की बात खरी ॥१०॥

साचा साहिब है और तिस की (नाई) वडिआई भी साची है। परंतू गुरों की उपदेस रूप जो खरी बात है तिस कर के (परखै) जाणै ॥10॥ अपने अनुभव कर बिनां पूछे कहते है:

ऊंधउ खपरु पंच भू टोपी ॥

(ऊधउ) उलटे रिदे को जो सीधा कीआ अरथात जो पमेसर के मनमुख कीआ है, एह हाथ में खपरु पकड़ा है। अर पंच तत्तों के जो गुण धारत कीए हैं इह टोपी पहिरी है॥

कांइआ कड़ासणु मनु जागोटी ॥

काइआ को जो जप तप कर के कसणा कीआ है इह कड़ासण है, जो छाती पर मोटी काली सेली वली होती है तिस का नाम कड़ासण है। मन को जो परमेसर वल जोड़ा है एह (जागोटी) गल की सेली है॥

सतु संतोखु संजमु है नालि ॥

सत, संतोख, संजम, एह साथ, चेले हैं॥

नानक गुरमुखि नामु समालि ॥११॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: जो गुरों द्वारे नाम को सिमरते हैं, इह भिखिआ मांगते हां॥11॥

कवनु सु गुपता कवनु सु मुकता ॥

परमेसर गुपत किस को है 1, बंधनों से छूटा हूआ कवन है 2?

कवनु सु अंतरि बाहरि जुगता ॥

अंतर सरीर में कौन जुड़ रहा है 3?

कवनु सु आवै कवनु सु जाइ ॥

आवता जावता कवन है 4?

कवनु सु त्रिभवणि रहिआ समाइ ॥१२॥

औ तीनों भवनो में कवन समाइ रहा है 5 ?॥12॥

घटि घटि गुपता गुरमुखि मुकता ॥

उत्र: (घटि घटि गुपता) परमेसर तों घटों घटों में है परंतू मनमुखों को गुपतु है 1,
गुरमुख घट घट में पूरन जानके बंधनों ते (मुकता) छूटा है 2॥

अंतरि बाहरि सबदि सु जुगता ॥

अंतर बाहरि (सबदि) ब्रहमु जुड़ रहा है 3॥

मनमुखि बिनसै आवै जाइ ॥

मनमुख मर के जाता है जनम के आवता है 4॥

नानक गुरमुखि साचि समाइ ॥१३॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: तीन भवनों में साचा अकाल पुरख समाइ रहा है, परंतू गुरमुखों ने जाना है 5 ॥13॥ पशन:

किउ करि बाधा सरपनि खाधा ॥

किउं कर इह जीव बांधा गिआ है 1, किउं कर माया सरपनी ने खाधा है 2?

किउ करि खोइआ किउ करि लाधा ॥

किउं कर जनम खोइआ है 3, किउं कर (लाधा) पाइआ है अरथात सफल कीआ है 4?

किउ करि निरमलु किउ करि अंधिआरा ॥

निरमल किउं कर होता है 5, अंधिआरा किउं कर दूर हो जाता है 6?

इहु ततु बीचारै सु गुरू हमारा ॥१४॥

इह प्रशनों का सिधांत जो विचारे सो हमारा गुरू है॥14॥

दुरमति बाधा सरपनि खाधा ॥

खोटी मत कर जीव बांधा है 1, दुरमत कर माया सरपनी ने खाधा है 2॥

मनमुखि खोइआ गुरमुखि लाधा ॥

मनमुखता कर जनम खोइआ है 3, गुरमति कर जनम लाधा, भाव सफल कीआ है 4॥

सतिगुरु मिलै अंधेरा जाइ ॥

जो अतिगुर मिले तौ अग्यानु अंधेरा जाता है 5॥

नानक हउमै मेटि समाइ ॥१५॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: हउमैं को मेटकै प्रमेस्वर में समावै इउं मन निरमल होता है 6। ईहा छठवां उतर स्री गुरू जी ने पहिले दीआ है, किउंकि सिधांत निरमलता पर रखना था॥15॥ अब सिधांत की पोड़ी चली:

सुंन निरंतरि दीजै बंधु ॥

(सुंन) अफुर परमेसर में निरंतर इस मन को बंध दीजीए॥

उडै न हंसा पड़ै न कंधु ॥

तिस कर के (हंसा) जीव उडता नहीं अर (कंधु) सरीर में भी नहीं पड़ता, भाव जनम मरण से रहित होता है॥

सहज गुफा घरु जाणै साचा ॥

सति रूप (गुफा) रिदे में जो (साचा) घर परमेसर है तिस को जाणै॥

नानक साचे भावै साचा ॥१६॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: सो साचा पुरश साचे परमेसर को भावता है॥16॥ ...

आदि कउ कवनु बीचारु कथीअले सुंन कहा घर वासो ॥

आदि रूप प्रमेस्वर का बीचारु (कवनु) कथन करीता है 1, पुना अफुर रूप का किस घर में निवास है 2?

गिआन की मुद्रा कवन कथीअले घटि घटि कवन निवासो ॥

गिआन की (मुद्रा) निसानी कवन कहीती है 3, अर घट धट में किस का निवास है 4?

काल का ठीगा किउ जलाईअले किउ निरभउ घरि जाईऐ ॥

काल का (ठीगा) सोटा किउं कर जलाइआ जावे 5, निरभउ घर में कैसे जाईए 6?

सहज संतोख का आसणु जाणै किउ छेदे बैराईऐ ॥

सहज संतोख गुणों का (आसणु) ठहिरणा किस प्रकार जाणे 7, अर वैरीआं को किस प्रकार (छेदे) कटे 8? दो तुकों में सिधांत कहिते हैं:

गुर कै सबदि हउमै बिखु मारै ता निज घरि होवै वासो ॥

गुरों के उपदेस से हउमै औ विख्यों को जब मारै तब इस जीव का (निज घरि) स्वै सरूप में वासा हो जावै॥

जिनि रचि रचिआ तिसु सबदि पछाणै नानकु ता का दासो ॥२१॥

जिन ने इस संसार के (रचि) बनाउ को (रचिआ) बणाइआ है, जो तिस (सबदि) ब्रहम को पछाणैं, स्री गुरू जी कहिते हैं: मैं तिस का दास हूं। इन के उत्र तेईसवी पौड़ी में होवेंगे॥21॥

इस प्रसन तो बीच ही रहे और एक बहुत काहला सिध आइआ। तिस ने कहा: पहिले मेरे प्रशन सुन कर उत्र दे लउ, पीछे इस के उत्त्र देने। स्री गुरू जी ने कहा: तुम भी कहो। तिस पर कहिता है:

कहा ते आवै कहा इहु जावै कहा इहु रहै समाई ॥

इहु जीव कहां ते आवता है 1, कहां जाता है 2, कहां समाइ रहिता है 3, और अवगत सरूप को कैसे पाउता है 4?

एसु सबद कउ जो अरथावै तिसु गुर तिलु न तमाई ॥

इस हमारे सबद का जिस को (अरथावै) अरथ आवै, भाव धारना में है तिस को मैं गुरू जानता हूं, तिस को तिल मात्र तमी नहीं है॥

किउ ततै अविगतै पावै गुरमुखि लगै पिआरो ॥

प्रथम चौथे प्रसन का उतर: जो गुरों दवारे परमेसर में पिआर लागे तौ (अविगते) परमेस्वर को पाउता है॥

आपे सुरता आपे करता कहु नानक बीचारो ॥

सो अबगत आपे ही सरब का (सुरता) ग्याता है, आपे ही सरब का करता है। स्री गुरू जी कहिते हैं: तिस के सरूप का बिचार करो॥

हुकमे आवै हुकमे जावै हुकमे रहै समाई ॥

पुना उस के हुकम में ही आवता है 1, औ हुकम ही जाता है 2, उस के हुकम में ही जीव संसार में समाई रहिता है 3॥

पूरे गुर ते साचु कमावै गति मिति सबदे पाई ॥२२॥

जो पूरे गुरों के सचे उपदेस को कमावै तो इस (मिति) मरयादा कर के (सबदे) ब्रहम की (गति) परापती पाईती है॥22॥ अब इकीवीं पौड़ी के उत्र कहिते हैं:

आदि कउ बिसमादु बीचारु कथीअले सुंन निरंतरि वासु लीआ ॥

आदि रूप परमेस्वर के सरूप का बीचार (बिसमादु) असचरज है 1, अरु (सुंन) अफुर परमेसुर ने निरंतर सरब ठौर में बासु लीआ है 2॥

अकलपत मुद्रा गुर गिआनु बीचारीअले घटि घटि साचा सरब जीआ ॥

कलपणां ते रहित होणा एहु गुरों के गिआन की (मुद्रा) नीसानी विचारीती है 3, और सरब जीआं के घटि घटि में साचा परमेसुर ही निवास कर रहा है 4॥

गुर बचनी अविगति समाईऐ ततु निरंजनु सहजि लहै ॥

गुरों के बचनों कर अवगत में समाईता है, इउं काल का ठीगा जलाईता है 5, तत नरिंजन को (सहजि लहै) ग्यान कर पाईता है, इउ निरभउ कै घर जाईता है 6॥

नानक दूजी कार न करणी सेवै सिखु सु खोजि लहै ॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: भगती ते बिना दूजी कार नहीं करणी चाहती, जेकर इउं सहिज संतोख की रिदे में इसथती जाणता है 7। जो सिख हो कर गुरों को सेवता है, सो कामादी वैरीओं के काटणे का खोजु लेता, भाव काटता है 8॥

हुकमु बिसमादु हुकमि पछाणै जीअ जुगति सचु जाणै सोई ॥

(सचु) निसचै कर जो जीउ की जुगती को जानता है, सोई उसी (हुकमि) अकाल पुरख असचरज के हुकम को पहिचानता है॥

आपु मेटि निरालमु होवै अंतरि साचु जोगी कहीऐ सोई ॥२३॥

आपा भाउ मेट कै (निरालमु) असंग हो कर जो अंतर साच धारन करता है, सोई जोगी कहीता है॥23॥ ... ...

मनमुखि भूलै जम की काणि ॥

मनमुख कर के जो वाहिगुरू से भूले हैं तिन को जम की कणौड है॥

पर घरु जोहै हाणे हाणि ॥

अरु पराए घरों को जो देखणा है, भाव प्रमेस्वर ते बिना होरों की आसा करनी, तिस में तो हान ही हान है कुछ नफा नहीं है॥

मनमुखि भरमि भवै बेबाणि ॥

मनमुख भरम कर के संसार (बेबाणि) उजाड़ में फिरते हैं॥

वेमारगि मूसै मंत्रि मसाणि ॥

किउं इक (वेमारगि) खोटे रसत्यों में चलने कर के लूटे गए हैं। जे कहे वहु खोटे रसते कौन हैं? उत्र: (मंत्रि मसाणि) मसाणों में बैठ कर मंत्र जपणे आदि॥

सबदु न चीनै लवै कुबाणि ॥

ब्रहम को तो पहचानते नहीं औ खोटीओं बाणीआं के (लवै) बोलते हैं॥

नानक साचि रते सुखु जाणि ॥२६॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: सो सच में रते हैं, जो सुख सरूप वाहिगुरू को जानते हैं॥26॥
गुरमुखों की उसतती करते हैं:

गुरमुखि साचे का भउ पावै ॥

गुरमुखि साचे वाहिगुरू का भउ मन में धारन करते हैं॥

गुरमुखि बाणी अघड़ु घड़ावै ॥

अरु गुरों दुआरे (अघड़ु) निकमी* बाणी को (घड़ावै) सवारते हैं॥
* वा (अघड़ु) असुध मन को गुरू तों सुधु करवाइ लेते हैं।

गुरमुखि निरमल हरि गुण गावै ॥

गुरमुखि हरी के गुन गाइकै निरमलु होते हैं, पुन: गावते हैं॥

गुरमुखि पवित्रु परम पदु पावै ॥

अरु गुरमुखि ही पवित्र परमपद को पावते हैं॥

गुरमुखि रोमि रोमि हरि धिआवै ॥

पुना गुरमुखि रोम रोम हरी को धिआवते हैं। इसमैं दो भाव हैं: भगतों के रोम रोम से रामनाम की धुनी होती है। हनूमानवत वा रोम रोम, भाव बन त्रिण में परमेसर को पूरन जान कर धिआन करते हैं॥

नानक गुरमुखि साचि समावै ॥२७॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: पुना गुरमुख साच सरूप में अरथात केवल मोख को पावते हैं॥27॥

हउ हउ मै मै विचहु खोवै ॥

(हउ हउ मै मै विचहु खोवै) अपने में से हंता ममता मैं मेरी जब जीव खोइ देवे॥

दूजा मेटै एको होवै ॥

और दूजा भाव मेटके एक रूप हो जावे तब इस एकता रूप गुफा में इसिथत रहिता है 5॥

जगु करड़ा मनमुखु गावारु ॥

मनमुख गवारों को जग करड़ा हो रहा है॥

सबदु कमाईऐ खाईऐ सारु ॥

जे गुरों का सबद कमाईए तौ संसार (सारु) लोहे सम करड़े को खाया जाइ 1॥

अंतरि बाहरि एको जाणै ॥

औ अंतर बाहर एक ब्रहम को समाई जाणै 6॥

नानक अगनि मरै सतिगुर कै भाणै ॥४६॥

अरु सतिगुरों के भाणे का विघनु करने ते त्रिसना अगनी मर जाती है 7॥46॥

अंतरि सुंनं बाहरि सुंनं त्रिभवण सुंन मसुंनं ॥

(अंतरि) स्वपन में भी वहु सुंन अर (बाहर)जाग्रत में भी सुंन है, पुना त्रिभवण तीसरा भवण जो सखोपति है तिस में भी सुंन ही है॥ जे कहै सुंन वाद आ जावेगा? तिस पर कहते है: (मसुंनं) चेतन रूप है*॥

* वा (अंतरि) सूपन अर (बाहिर) जाग्रत (त्रिभवन) तीसरा जो असथान सखोपिता है इह तीनों असथान (सुंन) चक हैं॥ जे कहे इन को प्रकासता कवन है? तहां कहिते हैं: (मसुंनं) चेतन वा प्रतक्ख अंतर बाहर तीनों भवन मंदर उजाड़ अकासादि में (सुंन) अफुर, भाव चेतन ही चेतन हैं॥

चउथे सुंनै जो नरु जाणै ता कउ पापु न पुंनं ॥

तीन अवसथा के साखी अफुर रूप चौथे को जो जाणै तिस को पाप पुंन का लेप नहीं है॥

घटि घटि सुंन का जाणै भेउ ॥

घटों घटों में सुंन का भेद जो जाणे। ईहां सुंन नाम अफुर परमेसर का है॥

आदि पुरखु निरंजन देउ ॥

सो आदि रूप औ माइआ रहत प्रकास सरूप को सरबत में (पुरखु) बिआपक देखता है॥

जो जनु नाम निरंजन राता ॥

जो निरंजन के नाम में रंगिआ हूअ है॥

नानक सोई पुरखु बिधाता ॥५१॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: सो पुरख (बिधाता) परमेसर का सरूप है॥51॥ प्रशन:

सुंनो सुंनु कहै सभु कोई ॥

सुंन सुंन तो सभ कोई कहिता है?

अनहत सुंनु कहा ते होई ॥

सो (अनहत) एक रस सुंन कहां ते प्रापति होता है 1?॥

अनहत सुंनि रते से कैसे ॥

(अनहत) एक रस सुंन ब्रहम में जो राते हैं, सो कैसे हैं? उतर:

जिस ते उपजे तिस ही जैसे ॥

जिस ब्रहम ते उपजे हैं तिस ही जैसे हैं अरथात ब्रहम रूप ही हैं॥

ओइ जनमि न मरहि न आवहि जाहि ॥

वुह आइ के जनमते नहीं औ मर के जाते नहीं॥

नानक गुरमुखि मनु समझाहि ॥५२॥

स्री गुरू जी कहते हैं: जिनों ने गुरों द्वारे मन को समझाइआ है॥52॥ जो बवंजा पौड़ी में अनहत सुंन कहां ते प्रापति होता है इह कहा था उस का उत्र कहिते हैं:

नउ सर सुभर दसवै पूरे ॥

नउ दवारों को रोक के दसवें दुआर में जो प्राणों को पूरे हैं॥

तह अनहत सुंन वजावहि तूरे ॥

तिस को अनहद सुंन के वाजे वजावते हैं। अर नौ दुआरे विखिओं की ओर से जिस ने रोके हैं अर दसवें परमातमा पूरे में ब्रिती वा सासों के पूरे हैं अरथान लगाइआ है। तिस को अनहत सुंन |(तूरे) सीघर (वजावहि) प्रगट हो जावता है 1॥

साचै राचे देखि हजूरे ॥

जो (हजूरे) पास सचे करता पुरख को देख कर साचे में रचे हैं॥

घटि घटि साचु रहिआ भरपूरे ॥

तिनों ने घट घट में सचा भरपूर हो रहा जाना है॥

गुपती बाणी परगटु होइ ॥

(गुपती) छुपी होई जो चेतन सता है, सो गुर बाणी कर जिस को प्रगट होती है॥

नानक परखि लए सचु सोइ ॥५३॥

स्री गुरू जी कहते हैं: सो पुरस (सचु) वाहिगुरू को (परखि) जान लेता है॥53॥

सु सबद का कहा वासु कथीअले जितु तरीऐ भवजलु संसारो ॥

इस (सबद) ब्रहम का कहां बासा कहीता है 1, अर जिस कर संसार समुंदर से तरि जावीए सो उपदेस कौन है 2?

त्रै सत अंगुल वाई कहीऐ तिसु कहु कवनु अधारो ॥

(त्रै सत) तीन और सात दस अंगुल जो प्राण पौण नासका ते बाहर जाता कहीता है तिस प्राणों का अधार कौण है 3?

बोलै खेलै असथिरु होवै किउ करि अलखु लखाए ॥

(बोलै खेलै) अनेक संकलप औ मनोराज करता जो मन चंचल है, सो किउं कर इसथित होवै 4, औ किउं कर अलख रूप अपना आपु जीव को लखावै 5?

सुणि सुआमी सचु नानकु प्रणवै अपणे मन समझाए ॥

स्री गुरू जी प्रथम चौथे प्रशन का उत्र लहिते हैं: हे स्वामी! तुम सुनों अपने मन को समझावौ कि संसार मिथ्या है औ परमेसर सति है। मन जो चंचल है, सो इहु विचार करने ते इसथत हो जाता है॥ आगे दो तुकों में सिधांतु है।

गुरमुखि सबदे सचि लिव लागै करि नदरी मेलि मिलाए ॥

जो वाहिगुरू क्रिपा कर के अपने (मेलि) सतसंग में मिलावे, तौ गुरों दुआरे इस निसचे कर सच में (लिव) बिरती लागे हैं॥

आपे दाना आपे बीना पूरै भागि समाए ॥५८॥

आप ही वाहिगुरू दाना है, भाव अंतर की जानने वाला है औ आप ही वहु (बीना) देखनेहारा है। तिस वाहिगुरों पूरे भागों कर जीउ समाईता है, इस प्रकार मन बोलता खेलता असथिर होता है 1॥58॥ उत्र:

सु सबद कउ निरंतरि वासु अलखं जह देखा तह सोई ॥

(सु सबद अलखं) ब्रहम जो अलखु है तिस का वासु जहां देखीता है तहां सोई है, भाव सरब पूरन है। पहले प्रशन का उत्र है॥

पवन का वासा सुंन निवासा अकल कला धर सोई ॥

पवन का वासा आप ने पूचा था, सो (सुंन) अफुर ब्रहम में तिस का निवासु है। वहु सुंन कैसा है? आप (अकल) कलपना वा कलेसों ते रहित है औ सर्ब में सोई कला को धार रहिआ है, भाव चेतन सत्ता के आस्रे प्राणों का सफुरणु है। 3 प्रशनु का उत्तर है॥

नदरि करे सबदु घट महि वसै विचहु भरमु गवाए ॥

जे गुरू क्रिपा करे तौ घट में गुरउपदेसु मनु में वसता है, पुना तौ ही मन में से भरम गवावता है॥

तनु मनु निरमलु निरमल बाणी नामो मंनि वसाए ॥

जब इहु जीउ मन में नाम को वसाए तब तन मन निरमलु होता है औ बाणी भी निरमलु होती है॥

सबदि गुरू भवसागरु तरीऐ इत उत एको जाणै ॥

गुरों के उपदेस द्वारा भवसागर से तरीता है औ इत उत एक को जाणे है। एहु दूजे प्रशन दा उत्तर है॥

चिहनु वरनु नही छाइआ माइआ नानक सबदु पछाणै ॥५९॥

जिस का चिंन औ वरणु नहीं है औ (छाइआ) अविद्या पुना माया दोनों जिस में नहीं हैं। स्री गुरू जी कहते हैं तिसु अलख ब्रहम को गुर सबद कर पुरस पछानता है; भाव प्रमेसर गुर सबदु दुआरा अपने आप को लखावता है॥59॥ पंचम प्रशन का उत्र है॥ तब सिधों ने कहा: हम तो पवन का अहार दुआरा अहारु पूछा था आप ने कहा कि सुंन पवन का अधार है। तां ते पुना एह उत्र कहो पवन का अहार कौन है? तिस पर कहते हैं:

त्रै सत अंगुल वाई अउधू सुंन सचु आहारो ॥

हे अवधूत! दस अंगल जो पवन नासका ते बाहर आवता है तिस का सचा पुंन ही अहारु भोजन है, भाव चेतन की सत्ता पा कर पवनु चेसटा करता है॥

गुरमुखि बोलै ततु बिरोलै चीनै अलख अपारो ॥

गुरों द्वारे जे नामु बोले, भाव जपे तौ तत्त के बसेस कर रोल लेता है। भाव मिथ्या पदारथों की वासनां को इटाइ कर अलख अपार रूप जो ब्रहमु है तिस को पहिचानता है॥

त्रै गुण मेटै सबदु वसाए ता मनि चूकै अहंकारो ॥

जां तीन गुनों को मेट कै उपदेस को मन में वसावता है, तां मन से हंकार (चूकै) उठ जाता है॥

अंतरि बाहरि एको जाणै ता हरि नामि लगै पिआरो ॥

औ अंतर बाहर एक को ही तौ जानता है, तो हरी नाम में पिआरु लागता है॥

सुखमना इड़ा पिंगुला बूझै जा आपे अलखु लखाए ॥

जब आप (अलखु) परमेस्वर लखावे तब (सुखमना इड़ा पिंगुला) रजो, सतो, तमो, तीन गुनों को बूझता है,* भाव जैसे एहु जड़ हैं तैसे जान कर इन का प्रकासु चैतन को जानता है॥

*16 वा जब प्रतक्ख तीन सुरों दुआरा पवन को चड़ाउने ठरावणे उतारने के प्रकार को समझे तब अलक्खु अपने आप को लखावता है॥

नानक तिहु ते ऊपरि साचा सतिगुर सबदि समाए ॥६०॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: (तिहु) तीनों गुनों ते साचा ऊपर है, परंतू जानता तो है, जो गुरों के उपदेस में समावे॥60॥ ...

तेरी गति मिति तूहै जाणहि किआ को आखि वखाणै ॥

हे भगवन! तेरी गती की मरयादा तूही जानता हैं, तेरी मरयादा कोई कहि के क्या वख्यान करे॥

तू आपे गुपता आपे परगटु आपे सभि रंग माणै ॥

तूं आपे (गुपता) निरगुण रूप हैं अर आप ही (परगटु) सरगुन हैं, आप ही तूं सभ अनंदों को माणता हैं॥

साधिक सिध गुरू बहु चेले खोजत फिरहि फुरमाणै ॥

(साधिक) जग्यासी औ सिध तथा गुरू औ बहुत चेले तेरे हुकम को खोजते फिरते हैं॥

मागहि नामु पाइ इह भिखिआ तेरे दरसन कउ कुरबाणै ॥

नाम को मांगते हैं, कहिते हैं: जो हम को इह भिखिआ पावो हम तेरे दरसन तों कुरबान जाते हैं॥

अबिनासी प्रभि खेलु रचाइआ गुरमुखि सोझी होई ॥

हे अबनासी प्रभू! तैने एह सभ खेल रचाइआ होइआ है, इह (सोझी) खबर गुरों दवारे होई है॥

नानक सभि जुग आपे वरतै दूजा अवरु न कोई ॥७३॥१॥

स्री गुरू जी कहिते हैं: तूं सभ जुगों में आप ही वरतता है तेरे से बिनां दूसरा और कोई भी नहीं हैं॥73॥1॥ इस उपदेश को स्रवण कर फिर सभ सिधों के रिदे में सांति होती भई और फिर चरचा करना छोड कर निम्रता पूरबक नमसकार कर कर स्री गुरदेव जी के गुन कथन कहते हूए अपने अपने असथानों को जाते भए॥